

ZÚMEसत्र 4 का वीडियो स्क्रिप्टस्

देखनेकोआँखें

इस सत्र में, हम सीखेंगे कि शिष्य दूर तक और तेजी से कैसे बढ़ते हैं, जब वे देखना शुरू कर देते हैं कि परमेश्वर का राज्य कहाँ नहीं है।

मनुष्य के रूप में, हम उन चीजों को सोचते हैं, ध्यान देते हैं और उनके लिए काम करते हैं जिसे हम देखते हैं। जिस तरह से चीजें हैं उसे हम वास्तविकता कहते हैं। लेकिन जब हम उन चीजों पर ध्यान देते हैं जिन्हें हम नहीं देख सकते, तो राज्य तेजी से बढ़ता है। चीजें जो वहाँ पर नहीं हैं या अब तक वहाँ नहीं हैं।

हमारे आस-पास ऐसी जगहें हैं जहाँ परमेश्वर की इच्छा उस तरह से पूरी नहीं होती जैसे स्वर्ग में होती है – विशाल रिक्त स्थान जहाँ टूटापन, दर्द, सताव, कष्ट और मृत्यु सामान्य रूप से प्रतिदिन के जीवन का हिस्सा हैं।

हर शिष्य - यीशु के हर अनुयायी को – यह देखना जरूरी है कि परमेश्वर का राज्य कहाँ है, और कहाँ नहीं है।

राज्य का कार्य - रिक्त स्थानों और अंधेरे स्थानों में प्रवेश करने और गहरी खाई को भरने तथा पृथ्वी पर अपने समय के दौरान प्रकाश और जीवन लाने बारे में है।

दो तरीकों से हम देख सकते हैं कि परमेश्वर का राज्य कहाँ नहीं है – जिन्हें हम जानते हैं और जिनसे हम अब तक नहीं मिले हैं।

पहला तरीका है जिन्हें हम पहले से जानते हैं, उनके द्वारा – दोस्तों, परिवारवालों, सहकर्मियों, सहपाठियों, और पड़ोसियों के साथ हमारे संबंध।

इस तरह से परमेश्वर की कहानी सबसे तेजी से आगे बढ़ती है। हम लोगों से प्रेम करते हैं और उनकी चिंता करते हैं क्योंकि हम पहले से ही उन्हें जानते हैं। यह स्वाभाविक है।

यीशु ने एक स्वार्थी अमीर आदमी की कहानी बताई – जो जीवन में अक्खड़ था पर अब उसे नरक में दंड मिल रहा है। अमीर आदमी ने विनती की – प्लाजर को मेरे पिता के मेरे घराने में भेज دیجिए। उसे मेरे पाँच भाईयों को चिताने के लिए कहें, ताकि वे इस भयानक जगह पर न पहुँचें।"

यीशु ने हमें दर्शाया कि स्वार्थी और कष्ट उठानेवाले लोग भी अपने करीबी लोगों से कैसे प्रेम करते हैं और उनकी चिंता करते हैं।

जिन लोगों को हम जानते हैं वह हमारे जीवन में इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं और वह चाहते हैं कि हम उनसे प्रेम करें। प्रेम, धीरज और दृढ़ता के साथ हमें उन संबंधों का रखवाला होना चाहिए।

शिष्य तब बढ़ते हैं जब वे अपने आस-पास परमेश्वर के द्वारा रखे गए लोगों की चिंता करते हैं और इस बारे में कुछ करने के लिए उनके पास योजना है।

आप उनकी देखभाल को बढ़ाने में सहायता कर सकते हैं और कुछ तरीकों से बढ़ने की एक सरल योजना बना सकते हैं।

इस तरह से -100 लोगों की सूची बनाएं जिन्हें वे पहले से जानते हैं।उन सूची को 3 भागों में बाँटें :

- जो यीशु के शिष्य हैं।
- जो यीशु के शिष्य नहीं हैं।
- जिनके बारे में वे पक्का नहीं जानते कि वे शिष्य हैं या नहीं।

अनुनायियों को और भी ज्यादा फलदायी और विश्वासयोग्य बनाने के लिए शिष्य उन्हें तैयार कर सकते हैं और उत्साहित कर सकते हैं।

जो अनुयायी नहीं हैं, उनके लिए - शिष्य सीख सकते हैं कि उन्हें प्रेमी परमेश्वर के बारे में कैसे बताएं।

जिनके बारे में वे निश्चित नहीं हैं - शिष्य उनके साथ अपना ज्यादा समय बितायें और उनके बारे में और ज्यादा जानें।

जिनसे हम नहीं मिले हैं उन में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य कहाँ नहीं है।

हमारे संबंधों से बाहर भी लोग हैं - वे लोग जिन्हें हम नहीं जानते, पड़ोसी जिनसे "नमस्ते" से ज्यादा हमने कभी कुछ नहीं कहा, व्यवसायी और महिलाएँ जिन्हें हम सड़कों पर देखते हैं, हर गाँव, नगर या शहर में अजनबी, जिनसे हम अब तक नहीं मिले।

यीशु ने कहा है - सभी देशों को शिष्य बनाओ।

यीशु ने कहा है - यरूशलेम, यहूदा, सामरिया और पृथ्वी की छोर तक तुम मेरे गवाह ठहरोगे।

जिन लोगों को हम जानते हैं उन्हें बताने से परमेश्वर की कहानी बहुत तेजी से आगे बढ़ेगी।

जिन लोगों को हम नहीं जानते उन्हें बताने से परमेश्वर की कहानी दूर तक पहुँचेगी।

जिन्हें हम नहीं जानते उनसे हम प्रेम करें और उनकी चिंता करें, तो यह स्वाभाविक नहीं, बल्कि दैवीय है और यह हमारे जीवन में पवित्र आत्मा का प्रमाण है।

छोटे, आखिरी और खोए हुए परमेश्वर के प्रिय जन हैं। उनके लिए वह बार-बार अपना हृदय ऊँडेलते हैं।

यदि हमें परमेश्वर की तरह बनना है, तो हमें उनमें अपना जीवन निवेश करने की जरूरत है।

परमेश्वर हमें जाने की आज्ञा देते हैं। और हमें केवल नजदीकी लोगों तक नहीं जाना है बल्कि उन लोगों तक भी पहुँचना है जो दुनिया के आत्मिक अंधकारमय क्षेत्रों में रहते हैं - ऐसे लोग जिन्होंने कभी यीशु का नाम तक नहीं

सुना है।

परमेश्वर का वचन कहता है –परमेश्वर घमंडी का विरोध करते हैं परंतु दीन पर अनुग्रह करते हैं।

यीशु के शिष्यों के रूप में हमें अवश्य ही –दीन, निराश और खोए हुए लोगों पर दया करनी चाहिये जैसे वह हम पर दया करते हैं।

शिष्य तब बढ़ते हैं जब वे उन लोगों के बारे में चिंता करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उनके जीवन में रखा है।

शिष्य तब और ज्यादा बढ़ते हैं जब वे उन लोगों की चिंता करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उनके करीब नहीं रखा है, लेकिन फिर भी उन्हें एक योजना बनाने की जरूरत है।

आप दूसरों के बारे में चिंता कराने के द्वारा एक शिष्य को बढ़ने में सहायता कर सकते हैं और इसके लिए सरल योजना भी बना सकते हैं - उन्हें प्रशिक्षित करने के द्वारा, उन लोगों को ढूँढने के लिए जिन्हें सुनने के लिए परमेश्वर ने पहले से तैयार कर रखा है।

यीशु ने कहा है –जब तुम किसी घर में जाओ तो कहना, परमेश्वर इस घर में शांति दें।" यदि वहाँ पर रहनेवाले लोग शांतिप्रिय हैं, तो तुम्हारी प्रार्थना से उन्हें शांति और आशीष मिलेगी। वरना तुम्हारी प्रार्थना तुम्हारे पास लौट आएगी।"

हम उस व्यक्ति को बुलाते हैं जिसे परमेश्वर ने पहले से तैयार किया है –शांति का व्यक्ति –जो परमेश्वर के संदेश के प्रति जिम्मेदार है और आज्ञा मानने तथा इसे दूसरों को बताने बांटने में विश्वासयोग्य है।

जहाँ हम कुछ लोगों को ही जानते हैं, वहाँ अपने दोस्तों, परिवार वालों, सहकर्मीयों, सहपाठियों और पड़ासियों को इसे बाँटने के बजाय, हम शांति के व्यक्ति को प्रशिक्षित करते हैं कि उसे दूसरों तक कैसे पहुँचना है।

लेकिन सबसे अच्छा परिणाम तब मिलता है जब हम विश्वासयोग्यता पर ध्यान देते हैं।

याद रखिये परमेश्वर की आज्ञा मानने और इसे दूसरों को बताने के द्वारा विश्वासयोग्यता दिखाई देती हैं।

विश्वासयोग्य लोग - आज्ञा मानते हैं और इसे दूसरों के साथ बाँटते हैं, वे अच्छी भूमि के समान है जिसके बारे में यीशु ने बताया।

यीशु ने कहा है –कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, जिससे तीस गुना या साठ गुना या सौ गुना फसल आयी।

- विश्वासयोग्य लोगों के पास कठोर हृदय नहीं होता जो परमेश्वर के वचन को नकार दें।
- जब उन पर सताव होता है या जब कठिन समय आता है, तो विश्वासयोग्य लोग पीछे नहीं हटते।
- विश्वासयोग्य लोग इस विश्व की चिंता या नाश हो जानेवाले धन के द्वारा अपना ध्यान भटकने नहीं देते।
- विश्वासयोग्य लोग गिरासेनियों के देश में दुष्टात्मा से ग्रस्त उस व्यक्ति के समान हैं जिसने आज्ञा

मानी और यीशु ने उसे जो दिखाया था उसे दूसरों को बताया।

एक विश्वासयोग्य व्यक्ति जिसने आज्ञा मानी और इसे दूसरों बताया, उसने बहुत से लोगों को उत्पन्न किया जो यीशु को और ज्यादा जानना चाहते थे।

अपनी आँखें खोलकर यह देखने से कि राज्य कहाँ पर नहीं है तथा जिन्हें हम जानते हैं उनके द्वारा अनजान लोगों तक पहुँचने से - शिष्य बढ़ते हैं और परमेश्वर का राज्य तेजी से दूर तक फैलता है।